CD–2093

B. A. (Part I) EXAMINATION, 2020

(Old Course)

HINDI LITERATURE

Paper First

(प्राचीन हिन्दी काव्य)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 75

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 21

(क) यहु तन जालौं मसि करूँ, ज्यूं धूवां जाइ सरग्गि।
मति वै राम दया करैं, बरसि बुझावै अग्गि॥
विरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लगे कोई।
राम वियोगी ना जीवौ, जिवै तो बौरा होई॥

अथवा

पूस जाड़ थरथर तन कांपा। सुरुज जाइ लंका दिसिचांपा।
बिरह बाढ़ि भा दारुन सीऊ। कंपि कंपि मरौं लेहि हरि जीऊ।
केत कहां हौं लागौं ओहि हियरे। पंथ अपार सूझ नहिं नहिं नियरे।
सौर सुषेती आवै जूड़ी। जानहुं सेज हिवंचल बूड़ी।
चकई निसि बिछुरै दिन मिला। हौं निसि बासर विरह कोकिला।
रैनि अकेलि साथ नहि सखि। कैसें जिऔं बिछोही पंखी।
बिरह सचान भए तन चांडा। जियत खाइ मुएं नहिं छोड़ा।
रकत ढरा मांसू गरा हाड भए सब संख।
धनि सारस होइ ररि मुई आइ समेटहु पंख।

(ख) आये जोग सिखावन पांडे।
परमारथी पुराननि लादे ज्यों बनजारे टाँडे।
हमारी गति पति कमलनयन की जोगी सिखैते राँडे।
कहो, मधुप, कैसे समायेंगे एक म्यान दो खाँडे।
कहु षट्पद, कैसे खैयतु है हाथिन के संग गाँडे।
काली भूख गई बयारी भखि बिना दूध घृत माँडे।
काहे कौ झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाँडे।
सूरदास तीनों नहिं उपजत धनिया धान कुम्हाड़े॥

अथवा

जो मुनीस जेहिं आयसु दीन्हा। सोतेहिं काजु प्रथम जनु कीन्हा॥
विप्र साधु सुर पूजत राजा। करत राम हित मंगल काजा॥
सुनत राम अभिषेक सुहावा। बाज गहागह अवध बधावा॥
राम सीय तन सगुन जनाये। पुरकहि मंगल अंग सुहाये।
पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं। भरत आगमन सूचक अहहीं॥
भये बहुत दिन अति अवसेरी। सगुन प्रतति भेंट प्रिय केरी॥
भरत सरिस प्रिय को जग माहीं। इहहू सगुन फलु दूसर नाहीं॥
रामहिं बंध सोच दिनराती। अंडन्हि कमठ हृदय जेही भांती॥
एहि अवसर मंगलु परम सुनि रहसेउ रनिवासु।
सोभत लखि बिधु बढ़त जनु बारिधि बीच बिलासु।

(ग) झलकै अति सुंदर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छ्वै।
हंसि बोलन में छवि फूलन की बरषा, उर ऊपर जाति है ह्वै।
लट लोल कपोल कलोल करै, कल कंठ बनी जलजावलि द्वै।
अंग-अंग-तरंग उठै दुति की, परिहै मनी रूप अबै धर च्वै॥

अथवा

घन आनन्द जीवन मूल सुजान की कौंधन हूँ न कहूँ दरसै।
सुन जानियौ धौं कित छाय रहै, दृग चातक प्रान तपै तरसैं।
बिन पावस तौं इन श्वास हो न, सु क्यौं करी यौं अब सो परसैं।
बदरा बरसै रितु में घिरिकै, नित ही अंखियाँ उघरी बरसैं।

2. "कबीर को कवि की अपेक्षा समाज-सुधारक के रूप में अधिक मान्यता मिली है।" इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए। 12

अथवा

'नागमती वियोग खण्ड' के संदर्भ में जायसी के वियोग वर्णन की विशेषताएँ बताइए।

3. "तुलसीदास के काव्य में लोकहित की भावना प्रधान थी।" इस कथन की विवेचना कीजिए। 10

अथवा

सूर के काव्य-सौन्दर्य का विवेचन कीजिए।

4. "प्रेम की पीर ही घनानन्द की पूँजी थी।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए। 10

अथवा

भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल क्यों कहा जाता है ? समझाइए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए : 10
   (i) विद्यापति की भाषा की समीक्षा कीजिए।
   (ii) रसखान की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।
   (iii) रहीम के काव्य में नीति-तत्व पर प्रकाश डालिए।
   (iv) कृष्ण भक्ति काव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
   (v) सगुण काव्य की शाखाओं का परिचय दीजिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं बारह प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 12

(i) ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवि कौन हैं ?

(ii) अष्टछाप के कवियों में श्रेष्ठ भक्त का नाम लिखिए।

(iii) हास्य भाव की भक्ति किस कवि ने की है ?

(iv) स्वच्छन्द काव्यधारा के प्रमुख कवि का नाम लिखिए।

(v) कबीर के गुरु कौन थे ?

(vi) 'सुजान रसखान' किसकी रचना है ?

(vii) किस कवि को मैथिल कोकिल कहा जाता है ?

(viii) जायसी द्वारा रचित महाकाव्य का नाम लिखिए।

(ix) सूर की भक्ति प्रमुखतया किस भाव की है ?

(x) रसखान के काव्य में किस रस की प्रधानता है ?

(xi) कबीर की भाषा को किस नाम से पुकारा जाता है ?

(xii) सूर के आराध्य देव कौन हैं ?

(xiii) तुलसीकृत 'रामचरितमानस' में कितने कांड हैं ?

(xiv) 'रमैनी' किसकी रचना है ?

(xv) 'भ्रमरगीत' नाम क्यों पड़ा ?